बदलती दुनिया

सेरिंग अंगदुई हिमाचल प्रदेश के कोमिक गांव में रहते हैं। उनका गांव दुनिया की सबसे ऊंची जगह पर है। हिमालय की गोद में बसे उनके गांव में कुल 15 परिवार रहते हैं। सेरिंग और गांव के अन्य परिवार ज्वार (बार्ली) की फसल पर मुख्य रूप से आश्रित हैं। उनके पूर्वज पिछली कई पीढ़ियों से भारी बर्फबारी से होने वाली नमी में इस फसल को उगाते रहे हैं। लेकिन पिछले 15 सालों के दौरान यहां बर्फबारी काफी कम हो गई है। पहले दो से तीन मीटर तक बर्फबारी होती थी लेकिन अब हर साल एक मीटर तक ही बर्फ गिर रही है। उनके गांव में ग्लेशियर के पानी से बनी जलधारा थी लेकिन वह 1990 के दशक में गायब हो गई। कभी यहां फसलों को एकत्रित करने के लिए जगह कम पड़ती थी। अब जगह तो है लेकिन फसल कम हो गई है।

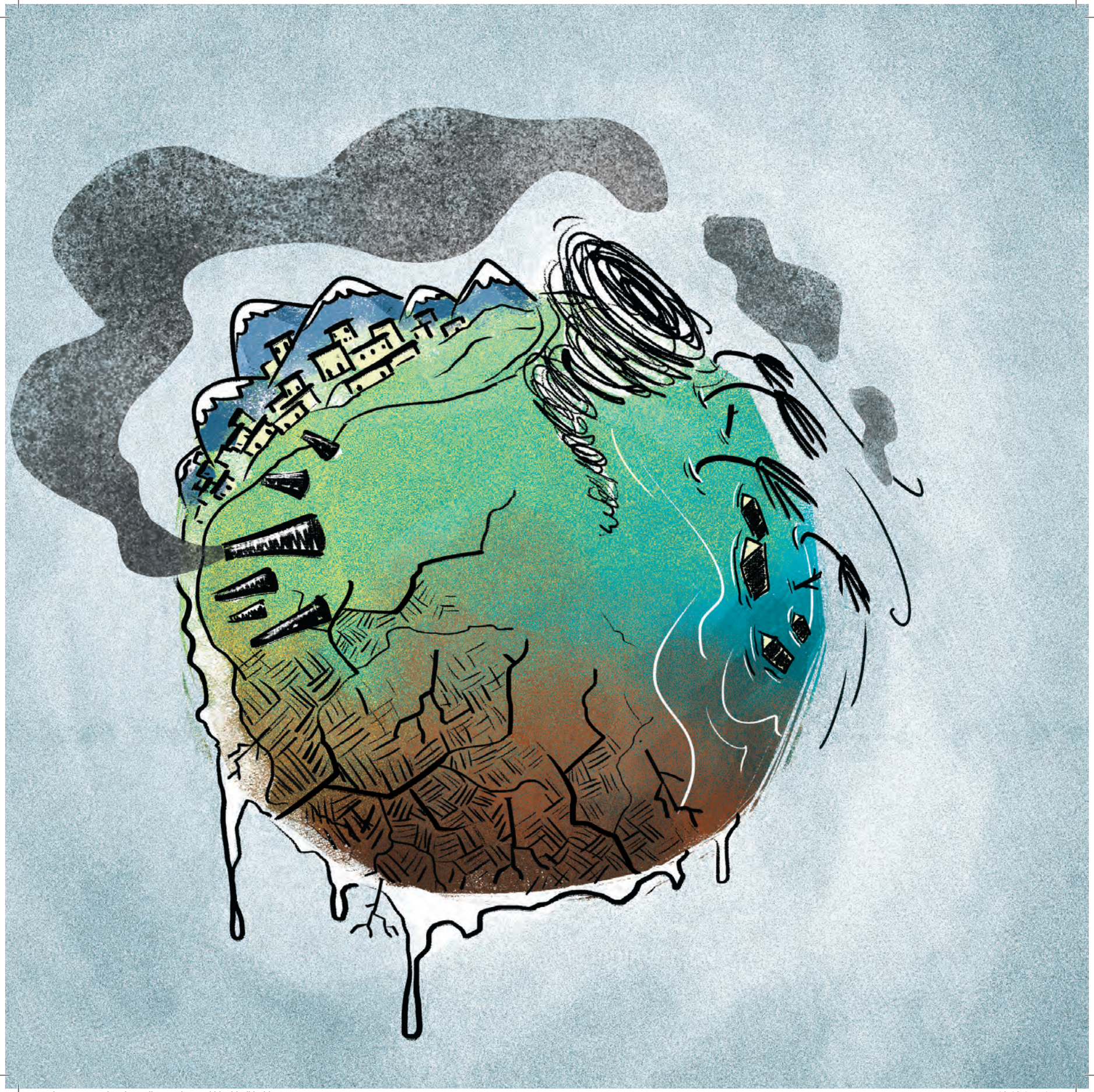

हमारी दुनिया बदल रही है। पहले यह बदलाव धीमी गति से हो रहा था लेकिन अब हालात बदल चुके हैं। आज आप अपनी आंखों के सामने इस बदलाव को देख सकते हैं।

उदाहरण के लिए उत्तर भारत में दशहरा त्योहार ठंड के आने का सिग्नल माना जाता था। इस त्योहार पर अलमारी में रखे रजाई और गद्दे निकल आते थे। लेकिन क्या अब ऐसा होता है? जवाब है नहीं। कठकड़ाती ठंड भी जैसे अब गुजरे जमाने की बात हो गई है। ठंड का मौसम भी आधा दिसंबर गुजरने के बाद शुरू हो रहा है।

अब जरा पुराना वक्त याद कीजिए। वह वक्त याद कीजिए जब आप स्वेटर पहनना शुरू कर देते थे। क्या अब भी उसी वक्त स्वेटर पहनना शुरू कर रहे हैं? बारिश के बारे में भी सोचिए। क्या अब भी वैसी ही बारिश होती है? क्या पेड़ों में फूल उसी वक्त आ रहे हैं, जैसे पहले आते थे? अपने परिवार और दोस्तों से बात करके देखिए। इससे भी अच्छा हो अगर हम अपने दादा-दादी से इस बारे में बात करें।

हम पाएंगे कि बदलाव तो हो रहा है। लेकिन अभी यह बदलाव हमारी जिंदगी के लिए चुनौती नहीं बना है। हालांकि बहुत से लोगों, खासकर आपके दोस्तों के लिए यह बदलाव खतरनाक हो सकता है। कोमिक गांव के किसान सेरिंग के लिए इस बदलाव का मतलब है भोजन की कमी। असम के दीमाकुची में रहने वाले 9 साल के रामू डेमारी के लिए इस बदलाव का मलतब है मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों का बढ़ना। हार्वी तूफान के पीड़ित आठ वर्षीय जेवियर सालदीवर के लिए इस बदलाव का मतलब है मौत।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने जनवरी 2019 को बताया कि साल 2018 पिछले 117 सालों में छठा सबसे गर्म साल था। 2018 छठा ऐसा साल है जब मॉनसून की बारिश सबसे कम हुई। इस साल भूमि, सतह और वायु का औसत तापमान 1981-2000 के औसत तापमान के मुकाबले 0.41 डिग्री सेल्सियस अधिक था। आईएमडी के विश्लेषण के मुताबिक, अब तक सबसे गर्म 11 साल पिछले 15 वर्षों की अवधि यानी 2002-2018 के दौरान रहे। 2016 और 2017 के बाद 2018 लगातार तीसरा सबसे गर्म साल रहा। यूरोप की कोपरनिकस क्लाइमेट चेंज सर्विस के अनुसार, साल 2019 का सितंबर महीना अब तक का सबसे गर्म सितंबर रहा है।

साल 2019 में दुनियाभर में 2.2 करोड़ लोग प्राकृतिक आपदाओं के चलते विस्थापित हुए

जलवायु परिवर्तन से विलुप्त होने वाली पहली प्रजाति थी गोल्डन टोड (सुनहरा मेंढक)। यह मेंढक 1989 में विलुप्त हो गया